राजस्थान पत्रिका

सम्पादकीय

जीवनी के संदेश

व्यक्ति पूजा की आलोचना करते नहीं थकने वाले भाजपा नेताओं को ये हो क्या गया है? अपने जीवित नेताओं की जीवनी विद्यार्थियों को पढ़ाकर आखिर वे संदेश क्या देना चाहते हैं? ये कि नरेन्द्र मोदी कैसे साधारण परिवार में पैदा होकर भी प्रधानमंत्री पद तक पहुंच गए अथवा ये कि मोदी के बारे में वे कितना सोचते हैं? कारण जो भी रहे हों लेकिन स्वयं मोदी ने अपनी जीवनी नहीं पढ़ाने की सलाह देकर इस अध्याय को तो समाप्त कर दिया है लेकिन इस बात की क्या गारंटी है कि भविष्य में ऐसे दूसरे अध्याय फिर नहीं खुलेंगे? माना कि मोदी ने भाजपा को उन ऊंचाइयों तक पहुंचाया है जिसकी कल्पना पार्टी नेताओं को शायद सपने में भी नहीं रही होगी लेकिन इतना कर देने भर से क्या किसी नेता की जीवनी स्कूल की पुस्तकों में शामिल कर दी जानी चाहिए? देश में अनेक नेता ऐसे हुए हैं जो सामान्य परिवारों में जन्म लेकर भी उच्च पदों तक पहुंचने में कामयाब रहे हैं लेकिन कितनों की जीवनी छात्रों को पढ़ने को मिली। अपने नेताओं के प्रति आदर और सम्मान दर्शाना अच्छी बात है लेकिन ऐसे आदर और सम्मान के पीछे जब चाटुकारिता झलकने लग जाए तो वही हंसी का पात्र बना देती है। मोदी को प्रधानमंत्री पद संभाले तो अभी पांच दिन ही हुए हैं लेकिन अटल बिहारी वाजपेयी तो छह साल तक देश का नेतृत्व कर चुके हैं और आज भी भाजपा के सबसे लोकप्रिय नेता माने जाते हैं। उनकी जीवनी पढ़ाने के बारे में किसी भाजपा नेता को क्यों नहीं सूझी? राजनीति में व्यक्ति पूजा का यह खेल भाजपा में ही हो ऐसा नहीं।

अपने नेताओं के प्रति आदर और सम्मान दर्शाना अच्छी बात है लेकिन इसके पीछे जब चाटुकारिता झलकने लग जाए तो वही हंसी का पात्र बना देती है।

देश के तमाम राजनीतिक दलों में ऐसे नेताओं की कमी नहीं जो व्यक्ति पूजा के मौकों की तलाश में ना रहते हों। देश के हर शहरों में सार्वजनिक स्थलों पर लगी मूर्तियां ऐसे ही नेताओं के प्रयासों के परिणाम हैं। नेताओं को समझना चाहिए कि महान नेताओं की जीवनी किताबों में छपाने या उनकी मूर्तियां लगाने से देश का चारित्रिक स्तर नहीं बढ़ सकता। राजनीति में शुचिता का दौर तभी पनप सकेगा जब देश की जनता इन नेताओं के पदचिह्नों पर चलने का साहस दिखाए। भाजपा के नेता वाकई मोदी का सम्मान करते हैं तो प्रतिज्ञा करें कि वे ना तो राजनीति को व्यवसाय का जरिया बनने देंगे और न ही राजनीति में अपने परिजनों को बढ़ावा देने के प्रयास करेंगे।

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। - वाल्तेयर

बात-करामात

अकेला चना

क्या करेंगे मोदी? क्या बिगाड़ लेंगे हमारा? अरे भैया। जब हमने ससुर गांधी-नेहरू की ही नहीं सुनी तो मोदी किस खेत का करेला है। हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। हम तो जैसे हैं वैसे ही रहेंगे। इतना कह कर बाबू बेइमान चंद ने अपनी मूंछों पर ऐसे ताव दिया जैसे उसकी मूंछें किसी पांच सितारा होटल के दरबान जैसी हों। वास्तव में बाबू के चेहरे पर चंद बाल हैं। उसका दावा सुन हम तैश में आ गए और चिल्लाए-अरे ओ बेइमान! अब तेरे दिन लद चुके हैं। देखना कुछ ही दिन में सब ठीक हो जाएगा। सारे काम ढंग से होंगे। अफसर रिश्वत लेना छोड़ देंगे। मिलावटी जींस बाजार में मिलनी बंद हो जाएगी। कामचोर मेहनत करने लगेंगे। हमारी बात काट कर वह बोला- शेखचिल्ली! हमने कहा-कौन? बेइमान चंद हंसते हुए बोला- तुम। अरे भैया। जिस कौम के खून में ही बेइमानी, भ्रष्टाचार घुस गया हो उसे न डॉ. गांधी मिटा सकता है न ही डॉ. मोदी। अब देखो लाख-सवा लाख रुपया महीना तनखा पाने वाले ही रिश्वत पर मुंह मार रहे हैं तो क्या कहने। क्या शासन के आला अधिकारी दूध के धुले हैं। कानून के रक्षकों ने ही दलाल पाल रखे हैं। अरे भैया बेइमानों का नहीं है इस देश में टोटा! वे तो हर जगह मिलेंगे, चाहे अजमेर हो या कोटा।

अब तुम बताओ, एक मोदी क्या कर लेंगे? किस-किस अफसर पर नजर रखेंगे, कहां-कहां दलाली रोकेंगे?

रोज अखबार में खबर आती है कि फलां जगह भ्रष्टाचारी पकड़े गए। उस शहर में सट्टेबाज दबोचे गए। कस्बे में हरियाणा से आई अवैध शराब पकड़ी गई। बैंक में एक बुजुर्ग को ठग लिया गया। साफ करने के बहाने जेवर ही साफ कर ले गए। रोज जंजीरें टूट रही है। प्रतिदिन वाहन चोरी हो रहे हैं। अब तुम बताओ। एक मोदी क्या कर लेंगे? किस-किस आला अफसर पर नजर रखेंगे? कहां-कहां दलाली व कमीशनखोरी रोकेंगे? और सुन लो ध्यान से। जब हम-तुम यह बातचीत कर रहे हैं तब भी किसी न किसी दफ्तर में कोई अफसर रिश्वत लेने का जुगाड़ बिठा रहा होगा। जरा सोच कर बताओ कि ऐसी परिस्थिति में क्या करेंगे मोदी? बेइमान चंद ने अपने तर्कों से हमारी बोलती बंद कर दी। समझ में नहीं आ रहा कि हम क्या कहें। फिर भी हम बोले- लेकिन ध्यान रखना बेइमान चंद जैसे एक मछली तालाब गंदा कर देती है वैसे ही एक सिंह को देख दर्जनों गीदड़ दुम दबा भाग जाते हैं।

- राही

प्रच्छन्न : उपालंभ

महासमर 2128

इससे अच्छा है कि यह मान कर चलें कि कल कुछ असाधारण घटित ही नहीं हुआ। वे बिना एक भी शब्द कहे, सहज भाव से शृंगार करवाने के लिए बैठ गईं। सैरंध्री की भी जिह्वा नहीं हिली और अंगुलियां चलने लगीं। सैरंध्री ने अभी रानी सुदेष्णा की केश-सज्जा ही निपटाई थी कि उसने कीचक का स्वर सुना। वह बाहर द्वार पर खड़ी परिचारिका को आदेश दे रहा था कि वह रानी को उसके आने की सूचना दे। सैरंध्री जानती थी कि कीचक, रानी की अनुमति की प्रतीक्षा नहीं करेगा। वह भीतर आ जाएगा और उसकी खोज आरंभ कर देगा। रानी भी किसी बहाने से इधर-उधर खिसक जाएंगी। तब वह होगी और कीचक होगा। उसे उसकी बातें सुननी पड़ेंगी। क्या भरोसा, वह फिर कल के समान बल-प्रयोग करे। आज सैरंध्री को वह स्थिति नहीं आने देनी थी। आज वह उससे भागेगी भी नहीं और वार्तालाप को उस दिशा में भटकने भी नहीं देगी कि कीचक अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा सके।

सब कुछ प्रायः उसकी अपेक्षा के ही अनुकूल हुआ। परिचारिका ने रानी को कीचक के आने की सूचना दी। रानी ने एक दृष्टि अपने निकट खड़ी सैरंध्री पर डाली और कीचक को लिवा लाने की अनुमति दे दी। सैरंध्री ने भी ऐसा कुछ नहीं किया, जिससे यह लगे कि वह असहज हो गई है अथवा उसके आस-पास कुछ असाधारण घटित होने वाला है। वह सहज भाव से उस मंडप से लगे उद्यान की ओर चल पड़ी। कोई भी देख सकता था कि न तो उसने छुपने का प्रयत्न किया था और न भागने का। सबके देखते-देखते वह उद्यान की ओर गई थी। कीचक आकर रानी सुदेष्णा के सम्मुख खड़ा हो गया। उसने अपनी दृष्टि इधर-उधर घुमाई और नेत्रों तथा हाथों के संकेत से पूछा, 'वह कहां है?' 'लगता है, आपको उसके विरह में रात भर नींद नहीं आई भैया।'

'अब नींद कहां सुदेष्णे!' कीचक बोला, 'उसका मुखमंडल मेरे नेत्रों के सम्मुख घूमता रहता है। निद्रा आ जाए तो स्वप्नों में भी वही होती है। जब तक उससे समागम नहीं हो पाएगा, मेरे जीवन में कोई रस नहीं रहेगा। वह है कहां?'

सुदेष्णा ने उद्यान की ओर संकेत कर दिया। कीचक की दृष्टि उस ओर उठी। सैरंध्री मंथर गति से चली जा रही थी। 'यह मुझसे भागने की कोशिश तो नहीं कर रही है।' कीचक ने मन ही मन सोचा, 'यह तो जैसे अपनी मयूरी की-सी चाल से मुझे मुग्ध करती हुई अपने पीछे आने का निमन्त्रण दे रही है।''जाओ, एकांत में लुभा लो उसे।'

कीचक की समझ में नहीं आया कि यह सुदेष्णा का प्रोत्साहन था अथवा उपालंभ। किंतु यह सब समझने की उसने प्रतीक्षा नहीं की। वह वेगपूर्वक उसी ओर चल पड़ा। सैरंध्री की उसकी ओर पीठ थी फिर भी ध्वनियों तथा अपने अनुमान से वह समझ रही थी कि वह उसके पीछे आ रहा है। किंतु इससे पहले कि वह आकर पीछे से उसे पकड़ने का प्रयत्न करे, वह पलटकर खड़ी हो गई। अब वे दोनों आमने-सामने थे।

सैरंध्री ने उसे देखा और इस प्रकार अपना मार्ग बदल लिया जैसे वह उससे बच कर निकल जाना चाहती हो। कीचक लपक कर उसके सम्मुख खड़ा हो गया। सैरंध्री ने उसकी ओर देखा। 'तुम भाग कर राजा के पास जाकर भी गुहार कर आईं किंतु कुछ नहीं हुआ।' कीचक बोला, 'इसका अर्थ समझती हो?'सैरंध्री ने पुनः उस पर एक दृष्टिपात किया, किंतु न वह मुख से कुछ बोली और न ही उसने वहां से भागने का प्रयत्न किया।'समझने का प्रयत्न करो सैरंध्री!' कीचक आदेशात्मक स्वर में बोला, 'मेरा बल और रण-कौशल ऐसा है कि यहां कोई मेरा विरोध कर जीवित नहीं रह सकता। राजा भी।'

क्रमशः

- नरेन्द्र कोहली

मानव संसाधन मंत्री की वैदिक शिक्षा का समावेश शिक्षा प्रणाली में करने की पहल

वैदिक ज्ञान बिन अधूरी शिक्षा

दयानन्द भार्गव
प्रख्यात संस्कृत विद्वान्

प्रसन्नता की बात है कि मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने अपने मंत्रालय को इस विषय में विचार करने के लिए कहा है कि वैदिक अध्ययन को किस प्रकार मुख्यता दी जा सके और किस प्रकार परम्परागत वैदिक शिक्षा का समावेश शिक्षा प्रणाली में किया जा सके। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि दिल्ली पर मुगलों का शासन आने तक इस देश में वैदिक अध्ययन ही सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली के केन्द्र में था और उसी शिक्षा प्रणाली के आधार पर तक्षशिला और नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय सम्पूर्ण एशिया से जिज्ञासुओं को आकृष्ट करते थे।

मुगलों और अंग्रेजों के शासनकाल में वैदिक शिक्षा प्रणाली हाशिए पर डाल दी गई। इसका परिणाम यह हुआ कि इस देश की धरती पर जो चिन्तन विकसित हुआ था, वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उसका समावेश नहीं हो पाया। मैंने जब 58 वर्ष पूर्व स्नातक परीक्षा दी तो शेक्सपीयर का 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' तो पढ़ना सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य था किन्तु कालिदास का अभिज्ञान शाकुन्तलम केवल उन्हीं पांच-दस विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता था जो वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत पढ़ते थे। आज भी स्थिति वैसी ही है। यह स्थिति तब है जब कि पूरे यूरोप के कवि और विद्वान् अभिज्ञान शाकुन्तलम पर मन्त्रमुग्ध हैं और उसकी प्रशंसा में उसे कहीं शेक्सपीयर से भी ऊपर रख रहे हैं।

एक ऐसा पाठ्यक्रम बनाया जाए जिसमें इस देश के चिन्तन के मूलतत्वों का ज्ञान सबको दिया जा सके।

राष्ट्रीय दृष्टि से विचार करना होगा

भारत के स्वतंत्र हो जाने पर भी हम इस स्थिति को क्यों नहीं बदल पाए, यह एक विचारणीय प्रश्न है। इस स्थिति को हम भगवाकरण के राजनीतिक नारे से जोड़कर न देखें क्योंकि महात्मा गांधी से लेकर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और शिक्षा मंत्री मोहम्मद करीम छागला तक सभी ने संस्कृत के अध्ययन को बारम्बार रेखांकित किया है और इनमें से किसी पर भी भगवाकरण का आरोप नहीं लगाया जा सकता। आज जो हम संस्कृत दिवस मनाते हैं वह किसी भाजपा के नेता की देन नहीं है, प्रत्युत डॉ. कर्ण सिंह की देन है। इसलिए स्मृति ईरानी जब इस प्रश्न को दोबारा उठा रही हैं तो इस पर संकीर्ण दलगत दृष्टि से विचार न करके राष्ट्रीय दृष्टि से विचार करना चाहिए कि क्या हम अपनी शिक्षा में उस भारतीय प्रणाली को समुचित स्थान दें जो परतन्त्रता के युग में उससे छीन लिया गया था और अब स्वतन्त्र भारत में उसे पुनः वह स्थान मिलना चाहिए?

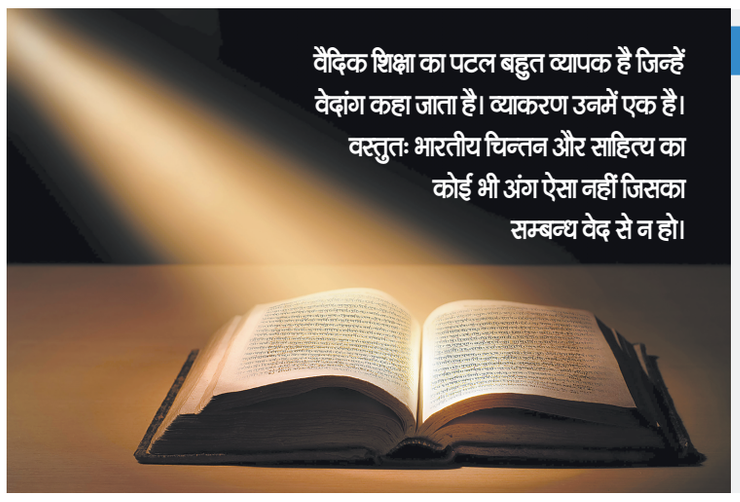

व्याख्याताओं को उचित स्थान मिले

इस सम्बन्ध में यह बात अवश्य विचारणीय है कि वैदिक शिक्षा प्रणाली मुख्य शिक्षा से तब से विच्छिन्न है जब से राजभाषा पहले फारसी और फिर अंग्रेजी बनी। यह डेढ़ हजार वर्ष का लम्बा अन्तराल है। इतने अन्तराल के बाद उस शिक्षा प्रणाली को दोबारा मुख्य धारा में लाने के लिए हमें उसमें यथोचित समयानुकूल परिवर्तन करने होंगे, अन्यथा वह पिछड़ जाएगी। एक उदाहरण के द्वारा अपनी बात स्पष्ट करना चाहूंगा। हम जब भी वैदिक अध्ययन की बात करें तो हमें वेद के आधुनिक व्याख्याताओं को उचित स्थान देना होगा। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि आज जहां भी वेदों का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है वहां वर्तमान काल में श्रीअरविन्द ने जो कुछ वेदों के सम्बन्ध में कहा, उसकी चर्चा प्रायः नहीं के बराबर की जाती है। पुराने भाष्यकारों ने वेदों के सम्बन्ध में जो कुछ कहा वह उनके युग की आवश्यकताओं के अनुरूप था। उसे उसी परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए। किन्तु आज के युग में विद्यार्थी वेद से जो अपेक्षा रखता है, वह अपेक्षा आधुनिक भाष्यकार ही पूरी कर सकते हैं।

मुख्य धारा से जुड़े वेद शिक्षा

अश्वमेध यज्ञ का ऐतिहासिक महत्व है किन्तु क्या आज अश्वमेध यज्ञ किए जाने की कोई सम्भावना है? इसका यह अर्थ होगा कि वेद प्रासंगिक नहीं रह जाएगा। अब इसलिए उसके अध्ययन की भी सीमित आवश्यकता रहेगी। आज यही हो भी रहा है। किन्तु यदि यह दृष्टिकोण सामने लाया जाए कि वेद की दृष्टि समग्र है जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों पर समान बल है तो फिर वेद का अध्ययन- अध्यापन सबके लिए उपयोगी सिद्ध हो सकेगा। पुराने वेद भाष्य प्रचलन में हैं इसलिए उनका अध्ययन-अध्यापन सरल है। किन्तु यदि नवीन व्याख्याओं को अध्ययन- अध्यापन में स्थान देना हो तो उसके लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। सरकार वैदिक अध्ययन के आधुनिकीकरण पर बल दे तो यह भी मुख्य धारा का अंग बन सकता है।

सम्पूर्ण साहित्य का समावेश

मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने वैदिक शिक्षा पर बल दिया और यह ठीक ही है क्योंकि इस देश की समस्त चिंतनधारा का उद्‌गम उसी प्रकार वेद है जिस प्रकार समस्त यूरोप की चिन्तनधारा का उद्‌गम प्लेटो और अरस्तु हैं। वैदिक शिक्षा का पटल बहुत व्यापक है जिन्हें वेदांग कहा जाता है। व्याकरण उनमें एक है। वस्तुतः भारतीय चिन्तन और साहित्य का कोई भी अंग ऐसा नहीं जिसका सम्बन्ध वेद से न हो। अतः वैदिक शिक्षा में सम्पूर्ण भारतीय साहित्य का समावेश है। यह व्यापक दृष्टि अभी दिखाई नहीं देती। आज जो व्याकरण में विशेषज्ञता प्राप्त करते हैं, वे प्रायः वेद में कोई योगदान नहीं दे पा रहे हैं। ज्योतिष भी वेदांग है किन्तु ज्योतिषी भी प्रायः वेद के अध्ययन की उपेक्षा करते हैं। अर्थात् अंग और अंगी एक दूसरे से कट गए हैं।

पाठ्यक्रम से वेद नदारद

वेद के पाठ्यक्रम में श्रीमद् भगवदगीता नहीं है और जहां दर्शन के पाठ्यक्रम में श्रीमद् भगवदगीता है वहां वेद नहीं हैं। दूसरे शब्दों में कर्मकाण्ड और कर्मयोग एक दूसरे से कट गए हैं। इस कमी की ओर हमारा ध्यान पण्डित मधुसूदन ओझा ने दिलाया। किन्तु अभी भी यह कमी बनी ही है। दर्शन के पाठ्यक्रम से तो वेद का प्रायः बहिष्कार ही कर दिया गया है। श्रीअरविन्द के भाष्य को देखेंगे तो पता चलेगा कि वेदों में एक गम्भीर दर्शन है और वे केवल कर्मकाण्ड के लिये उपयोगी नहीं है।

जीवन से जुड़ा भारतीय दर्शन

इन सब कमियों को पूरा करने की आवश्यकता है। किन्तु सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात पर विचार करने की है कि वैदिक जीवन दर्शन को शिक्षा की मुख्यधारा में स्थान कैसे दिया जाए। वेद के विशेषज्ञ सब नहीं हो सकते किन्तु वेद के मूल संदेश को सबको पढ़ाया जाना चाहिए। उसके लिए एक सुविचारित पाठ्यक्रम बनाना होगा। यह कार्य उसी प्रकार का है जिस प्रकार का कार्य हमने विज्ञान अथवा समाजशास्त्र के क्षेत्र में किया है। न तो सभी लोग वैज्ञानिक हो सकते हैं और न समाजशास्त्री। किन्तु हमने एक ऐसे पाठ्यक्रम को सबके लिए अनिवार्य बनाया है जिसमें विज्ञान के और समाजशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों का ज्ञान सबको दिया जा सके।

इसी प्रकार वैदिक साहित्य के सम्बन्ध में भी किया जा सकता है। अर्थात् एक ऐसा पाठ्यक्रम बनाया जाए जिसमें इस देश के चिन्तन के मूलतत्वों का ज्ञान सबको दिया जा सके ताकि हमारे विद्यार्थी भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशेषता से परिचित हो सकें। समय की यही मांग भी है। इस सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है कि भारतीय दर्शन पश्चिमी दर्शन की तरह बुद्धि विलास नहीं है अपितु सीधा जीवन से जुड़ा है। अतः उसका अध्ययन विद्यार्थी के जीवन में एक सन्तुलन पैदा करेगा जिसकी आज बहुत आवश्यकता है। शिक्षा को अर्थकरी तो होना ही चाहिए किन्तु उसका यह भी उद्देश्य होना चाहिए कि विद्यार्थी को एक ऐसी जीवनदृष्टि दे जो उसके जीवन को सार्थकता प्रदान करे।

छात्रों को अधूरा ज्ञान

छात्र कर्मकाण्ड का अनुष्ठान तो करा देते हैं पर कर्मयोग के महत्व से अपरिचित रहते हैं।

वर्तमान में वैदिक साहित्य का अध्ययन- अध्यापन दो धाराओं में किया जा रहा है। आधुनिक पद्धति के विश्वविद्यालयों में वेद के सस्वर उच्चारण सिखाने की कोई व्यवस्था नहीं किन्तु वेद के अर्थ अवश्य बताए जाते हैं। वेदों का अर्थ करते समय या तो चौदहवीं शताब्दी के सायण भाष्य का सहारा लिया जाता है या मैक्समूलर जैसे विद्वानों का। किन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती या श्रीअरविन्द की व्याख्याओं की प्रायः उपेक्षा ही की जाती है। परम्परागत संस्कृत विश्वविद्यालयों में पश्चिम के विद्वानों का भी परिचय प्रायः नहीं दिया जाता, केवल सायण भाष्य ही केन्द्र में रहता है। इसके अतिरिक्त कुछ वेद पाठशालाएं भी चल रहीं हैं जिनमें सस्वर वेद पाठ सिखाया जाता है। इन पाठशालाओं में वेदों को कण्ठस्थ करना ही पर्याप्त समझा जाता है, अर्थ नहीं बताया जाता। छात्र कर्मकाण्ड का अनुष्ठान तो करा देते हैं किन्तु वेद में प्रतिपादित उस कर्मयोग के महत्व से अपरिचित रह जाते हैं जिसके कारण श्रीमद् भगवदगीता इतनी प्रसिद्ध हो गई।

...ताकि मातृ व शिशु मृत्यु दर में आए कमी

शोभा नारायण, स्वतंत्र टिप्पणीकार

कई मायनों में सस्ती स्वास्थ्य सुविधाओं के मामले में भारत वैश्विक राजधानी बना हुआ है। भारत में अच्छी गुणवत्ता वाली जेनेरिक दवाओं का उत्पादन होता है तो अस्पतालों में प्रशिक्षित हृदय रोग शल्य चिकित्सक हैं। इसके चलते पूरी दुनिया से लोग यहां आते हैं। सेरोगेसी क्लीनिक (किराए की कोख) अनगिनत निःसंतान माता-पिता की उम्मीदों के लिए आशा की किरण हैं। ऐसे माता-पिता यहां आकर संतान सुख प्राप्त कर रहे हैं।

साथ ही, विडम्बना तो यह है कि मातृ मृत्युदर मामले में भी भारत विश्व में सबसे आगे है। उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे पिछड़े और गरीब राज्यों में बच्चे के जन्म के साथ ही गर्भवती महिला की भी मौत हो जाती है। (हर आठ मिनट पर एक मौत का आंकड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है।) वर्ल्ड्स मदर्स रिपोर्ट-2013 के अनुसार 3,09,000 नवजात शिशुओं की मौत जन्म के पहले दिन ही हो जाती है। अन्य देशों की अपेक्षा मातृ मृत्यु दर में भी भारत आगे है। इसके कई कारण हैं। रिपोर्ट कहती है कि भारत में कुपोषण और सफाई व्यवस्था बड़ी समस्या है। गरीब महिलाएं घरों में ऐसी जगह बच्चों को जन्म देती हैं जो बहुत ही गंदा होता है। नवजात को गंदे फर्श पर ही रख दिया जाता है। स्तनपान कराने से मां को हतोत्साहित किया जाता है। घरों में डिलीवरी की यही स्थिति है। गरीब परिवार घरों पर ही घास-फूस में ही डिलीवरी कराना पसंद करते हैं और बच्चे की नाल भी ब्लेड से ही काट दी जाती है। 1990 में मातृ मृत्युदर प्रति लाख जन्म पर 437 थी। 'मिलेनियम डेवलपमेन्ट्स गोल' के तहत इसे 109 पर लाने का लक्ष्य रखा गया है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की हाल की रिपोर्ट के अनुसार भारत का आंकड़ा अब प्रति लाख जन्म पर 254 है।

मातृ मृत्युदर और शिशु मृत्युदर रोकने के लिए आशा स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की गई है।

भारत में स्वास्थ्य सेवाएं पिछड़े देशों से भी बदतर हैं। लाखों बच्चों की मौत तो जन्म के साथ ही हो जाती है।

ये आशा कार्यकर्ता सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं या चीन, ईरान और बांग्लादेश के 'बेयरफूट डाक्टर्स' की तरह कार्य करती हैं। 2005 में भारत सरकार ने हर गांव में एक स्वास्थ्य कार्यकर्ता तैनात करने का लक्ष्य निर्धारित किया था। वर्तमान में पूरे भारत में 9 लाख से अधिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता काम कर रही हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार इन कार्यकर्ताओं को उनके काम के बदले प्रोत्साहन राशि दी जाती है। उदाहरण के लिए यदि कोई आशा कार्यकर्ता गर्भवती महिला की अस्पताल में डिलीवरी कराती है तो उसे लगभग 600 रुपए जबकि गर्भवती महिला को इससे दुगनी (हर राज्य में अलग) राशि मिलती है। बच्चे को पूरी तरह संक्रमणमुक्त रखने पर उसे 150 रु. मिलते हैं। कुछ राज्यों ने तो आशा को मोबाइल तक दे रखे हैं।

पटना से दो घंटे की दूरी पर एक दूर-दराज के गांव में काम करने वाली आशा कार्यकर्ता अनीता कुमारी (30) का कहना है कि उसका कार्य है कि महिलाओं और बच्चों को आवश्यकतानुसार वैक्सीन मिलती रहे और जरूरत पड़ने पर अस्पताल ले जाए। एक गर्भवती महिला का कहना है कि वह अपने ससुर के घर में झोपड़ी में रहती है जहां पानी-बिजली नहीं है। मुर्गी, चूजे और सुअर झोपड़ी के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं। अनीता के सम्पर्क में आने से उसे काफी सुकून मिला है। आशा कार्यकर्ता ग्रामीण महिला और सरकार के बीच सम्पर्क अधिकारी के रूप में काम करती है। गांव के अन्तिम आदमी तक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने वाली आशा कार्यकर्ताओं के आलोचक भी कम नहीं हैं। कुछ का कहना है कि प्रोत्साहन राशि के चक्कर में झूठे आंकड़े दिए जाते हैं। आशा कार्यकर्ताओं को वेतन नहीं, प्रोत्साहन राशि मिलती है। वह भी जब महिला अस्पताल में शिशु को जन्म दे। आशा कार्यकर्ता न तो चिकित्सक हैं और न ही नर्स। उनकी भूमिका परिवार में सदस्य या गांव के मुखिया की तरह है। पूरे भारत में ये स्वास्थ्य सम्बंधी सेवाएं प्रदान कर रही हैं। यह व्यापक रूप से स्वीकार्य व्यवस्था है जिसकी जड़ें काफी गहरी हैं।

पाठक पीठ

बड़प्पन

नई सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशों के राष्ट्राध्यक्षों को बुलाकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अग्रज का जैसा बड़प्पन दिखाया है। इससे पड़ोसी देशों के साथ हमारे रिश्तों में प्रगाढ़ता आएगी। यह दो दशक से चल रही ढीली-ढाली विदेश नीति को नई दिशा देने के लिए सार्थक प्रयास है। इसका ये मतलब भी नहीं है कि वे इस सदाशयता व मैत्री को हमारी कमजोरी समझें। **- प्रमिला पगारिया,** उदयपुर

आक्रोश

भाजपा की सरकार में युवाओं के बुरे दिन शुरू हो गए हैं। राज्य सरकार ने पहले से जारी कई भर्तियां रद्द कर दी और कुछ परीक्षाओं के परिणाम जान बूझकर जारी नहीं कर रही है। तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती व अन्य परीक्षाओं के महीनों से अटके हुए परिणाम शीघ्र जारी किए जाएं। नहीं तो उसे तीव्र जन आक्रोश का सामना करना पड़ेगा। इंतजार की भी कोई हद होती है। **- पंकज जैन,** टोंक

खुशफहमी

सरकार बेरोजगारों की अग्नि परीक्षा क्यों ले रही है ? आरपीएससी की ओर से आयोजित अनेक भर्तियां पहले से अदालत में अटकी हुई हैं। जबकि इसी भाजपा ने विधानसभा चुनाव से पहले सुराज संकल्प यात्रा के दौरान लाखों युवाओं को रोजगार देने का वादा किया था। प्रचंड बहुमत से सत्त में आने के बाद अब उनके साथ इतना बड़ा धोखा क्यों? कहीं यह एकतरफा जीत का घमंड तो नहीं है? **- विकास सैनी,** मकराना

खिलवाड़

अपने चुनावी घोषणा पत्र में भाजपा ने 15 लाख नौकरियां देने का वादा किया था लेकिन बदले में क्लर्क भर्ती रद्द कर बेरोजगार युवाओं की आशाओं पर पानी फेर अपने असली मंसूबे जाहिर कर दिए हैं। युवा शक्ति को राज्य सरकार से बहुत अपेक्षाएं थी लेकिन उसने दमनकारी कदम उठाकर उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ किया है। लगता है आम आदमी के बुरे दिन आ गए। **- हीराराम सुथार,** बावड़ी

सप्ताह का श्रेष्ठ पत्र

पाठकों की वैचारिक ऊर्जा को प्रोत्साहित करने के लिए प्रति सप्ताह एक सर्वश्रेष्ठ पत्र का चयन किया जाएगा। सप्ताह के दौरान प्राप्त पाठकों के पत्रों में से इसे चुना जाएगा। चयन का आधार मुख्यतः विषय-वस्तु, भाषा-शैली और मौलिक-विचार होंगे। चयनित पत्र की घोषणा प्रति शनिवार को की जाएगी। अपना पूरा पता लिखें।
सर्वश्रेष्ठ पत्र विजेता को 500/- रुपए की पुस्तकें भेंट की जाएंगी।

विजेता पत्र लेखक
29 मई को पाठक पीठ में प्रकाशित पत्र **'फैसले लेने की आजादी'** की लेखक गीतांजलि शर्मा, पटना